वहाबी मत का सत्य

लेखक : आयतुल्लाहिल उज़मा सय्यदुल उलमा मौलाना सै0 अली नक़ी नक़वी
सम्पादन : नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन

क़िस्त : (1)

लेखक के दो शब्द

बिस्मिल्लाहिर्रहमार्निरहीम अलहम्दू लिल्लाहि रब्बिल आलमीन वस्सलातु अला सय्यादिल मुरसलीन व आलिहित्ताहिरीन ।

(परम् दयावान, दयानिधान अल्लाह के नाम से जो सारे संसारों का पालनहार, अल्लाह की सारी सराहना और रसूलों के प्रमुख मुहम्मद स0अ0 और उनकी पाक सन्तान पर सलवात)

मेरा लखनऊ में वास्तविक बचपन तो नहीं किशोरावस्था का समय था जिसे भारत की प्रचलित भाषा में बच्चा ही कहा जाता है जब हिजाज़ आधुनिक सऊदी अरब में सऊदी साम्राज्य की स्थापना हुई और वहाबी विचारधारा पूरी शक्ति के साथ दुनिया के सामने आई और उनके कार्यो का आरम्भ इस प्रकार हुआ कि पहले जन्नतुल मोअल्ला (मक्का मुअज़्ज़मा) के पवित्र मज़ारों को तोड़ा गया और फिर नज्द के बड़े क़ाज़ी इब्ने बलहीद ने दिखावा करते हुए मदीने के उलमा के फ़त्वे से 'जन्नतुल बक़ी' के पवित्र मज़ार भी तुड़वाए – जिससे मुस्लिम समाज के एक बड़े हिस्से में और शियों में पूर्ण रूप से एक खलबली मच गई इसलिए कि यहाँ शियों के चार इमाम हज़रत इमाम हसन[अ], इमाम ज़ैनुल आबेदीन[अ], इमाम मुहम्मद बाक़र[अ] और इमाम जाफ़रे सादिक़[अ] के पवित्र रौज़े भी थे। और इसके अलावा हज़रत सय्यदा–तुन–निसाईल आलामीन फ़ातेमा ज़हरा[स] की पवित्र क़ब्र भी थी। और दूसरी कब्रें भी थीं जिनसे दूसरे मुसलमान जुड़े हुए हैं।

भारत में शाह वली उल्लाह के समय से ही एक जत्था नज्दी विचारधारा को मानने वाला था मगर उस समय वह मुसलमानों में घुलेमिले थे। अब हिजाज़ की क्रान्ति के बाद उसने खुलकर इब्ने सऊद की हिमायत (support) शुरू कर दी। जफ़र अली खाँ का प्रसिद्ध समाचार पत्र ज़मींदार (लाहौर) इस जत्थे का महत्वपूर्ण अंग था। मशाइख़े सूफ़ी और लखनऊ के उलमा फिरंगी महल शियों के साथ मिल कर इस जत्थे से मुक़ाबले के लिए सामने आए। अतः फिरंगी महल में अन्जुमने "खुद्दामुल–हरमैन" तैयार हुई जिसके संरक्षक उस समय फिरंगी महल के मौलाना क़यामुद्दीन मुहम्मद अब्दुलबारी साहब थे और आल इण्डिया शिया कान्फ्रेन्स लखनऊ ने अन्जुमने "तहफ़फ़ुज़ मआसिरे मुतबर्रिका" तैयार की।

बिना शिया –सुन्नी भेदभाव के रिफाहे आम, लखनऊ में एक आम सभा का आयोजन हुआ। फिर क़ैसर बाग़ लखनऊ में हिजाज़

कान्फ्रेन्स हुई जिसमें शियों और फिरंगी महल के उलमा के अलावा पूरे भारत के बड़े–बड़े आलिम, सूफ़ी और कुछ बड़े मुस्लिम नेता भी पधारे और उनमें से जिनके नाम और चेहरे मुझे याद हैं वह मौलाना अब्दुल माजिद बदायूँनी, शाह फ़ाखिर इलाहाबादी और मौलाना मज़हरूद्दीन, सम्पादक 'अलअमान' और सबसे आगे–आगे मौलाना शाह मुहम्मद सुलेमान फुलवारवी थे।

प्रसिद्ध मुस्लिम नेताओं में अली बन्धु शुरू में ईब्ने सऊद के प्रशंसक थे और बहुत सी घटनाओं को झुठलाते थे। मगर जब उन्होंने खुद जाकर हिजाज़ की स्थिति देखी तो उनके व्यवहार में बदलाव आया और हिजाज़ कान्फ्रेन्स में वह भी पधारे।

इस कान्फ़्रेन्स में शिया उलमा में से जनाब नजमुल मिल्लत और जनाब नासिरूल मिल्लत आदि, अहले सुन्नत के उलमा में से मौलाना अब्दुल बारी आदि की सहमति से इलतवाए हज (हज स्थगन) का प्रस्ताव पेश हुआ और दूसरे उलमा के अलावा फख़्रेक़ौम मौलवी सय्यद कल्बे अब्बास साहब ने इसके समर्थन में घनघोर भाषण दिया। और जहाँ तक याद है मज़हरूद्दीन साहब सम्पादक अलअमान ने भी इसका समर्थन किया। मगर अली बन्धु मौलाना शौकत अली और मौलाना मुहम्मद अली जौहर ने इस प्रस्ताव का विरोध किया और मौलाना मुहम्मद अली ने अपनी सूझबूझ का परिचय देते हुए यह श्लोक पढ़ाः

"उम्र गुज़री है इसी दश्त की सय्याही में"
(आयु इसी वन के घूमने में बीती है)

उनका भाशण समाप्त होते ही शाह मुहम्मद सुलेमान साहब फुलवारवी खड़े हुए और उन्होंने इनकी काट करते हुए कहा कि केवल राजनैतिक सूझबूझ ही कुछ नहीं इसके साथ–साथ धार्मिक सूझबूझ भी आवष्यक है। मैं इस श्लोक को आधा नहीं पढ़ूँगा मुझे अधिकार है कि मैं इस श्लोक का दूसरा टुकड़ा भी पढ़ूँ।

"पाँचवीं पुश्त है शब्बीर की मददाही में"

अतः बहुमत से प्रस्ताव माना गया। दूसरे उलमा के साथ इस जेहाद में हमारे पिता जनाब मौलाना मुम्ताजुल उलमा सय्यद अबुल हसन उर्फ़ मुन्नन साहब बड़े उत्साह के साथ सम्मिलित थे इसलिए मैं जिसके युवावस्था के साथ क़लम चलाने का शुरूआती समय था अपने कलम को लेकर इस मैदान में उतरा और पहली बार बिना किसी भेदभाव के शिया सुन्नी इस्लामी दुनिया से परिचित हुआ।

इसमें सबसे महत्वपूर्ण मामला कब्रों पर ईमारत बनाने का था इसलिए "ज़मीदार" समाचार पत्र के एक निबन्ध की काट में "अलबैतुल मामूर फ़ी इमारतिल कुबूर" (क़ब्रों के भवन के सम्बन्ध में निर्मित घर) नाम की किताब लिखी जो उस समय के बड़े शिया प्रकाशन "नूरूलमताबिअ" से प्रकाशित हुई और बहुत सी इस्लामी पत्रिकाओं में इस पर समीक्षाऐं हुई और दूर–दूर से इसकी मांग आई और यह किताब बहुत थोड़े समय में ही सम्पूर्ण देश में फ़ैल गई।

...............(जारी)

